जनवरी: 2023

वर्ष : 6 अंक : 4

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"जो सोचता है कर पाएगा वह कर पाता है, और जो नहीं कर पाने की सोचता है वह नहीं कर पाता। यह एक अनवरत निर्विवाद नियम है।- पेबलो पिकासो संस्थान के मासिक न्यूज़लेटर का जनवरी 2023 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

हर साल 1 जनवरी को पूरी दुनिया में नया साल मनाया जाता है। ये नया साल अपने आप में अनूठा होता है क्योंकि यह किसी भी धार्मिक, क्षेत्रीय, जातिगत भिन्नताओं से परे होता है। इस नए साल की खुशी, धूम और रौनक पूरी दुनिया में देखने को मिलती है। नया वर्ष हम सभी के लिए एक संदेश लेकर आता है। गुज़रा हुआ वर्ष सामान्यतः कई अलग-अलग उतार-चढ़ाव से भरा होता है, जिसमें अच्छी और बुरी दोनों ही यादें हमारे पास होती हैं। बीते साल में हमें गम और खुशी दोनों का अहसास होता है, लेकिन नए साल में हम केवल ऐसी कामना करते हैं कि आने वाला साल हम सभी के जीवन में ढेरों खुशियाँ लेकर आये। हम पिछली गलतियों से सीखकर नए साल में प्रवेश करते हैं और कोशिश करते हैं कि वह गलतियाँ हम आगे दोबारा कभी न करें।

नया साल हमारे लिए नया समय ही नहीं बल्कि नए समय के साथ नई उम्मीदें, नए सपने, नया लक्ष्य, नए विचार और नए इरादे लेकर आता है। हम सभी को नए साल की शुरुआत अच्छे और नेक कामों के साथ करनी चाहिए। नया साल हमारे मन के भीतर आशा की नई किरण जगाता है। नया साल तो हर साल आता है लेकिन क्या कभी हमनें ये सोचने की कोशिश की है कि हम इस साल क्या नया और खास करें जिससे ये साल हमारे लिए यादगार साल बन जाए। बीता हुआ कल हमें आज के लिए और आने वाले कल के लिए सीख देकर जाता है कि कैसे हम अपने कल को आज से बेहतर बना सकते हैं।

प्रस्तुत अंक में संस्थान में दिसंबर माह में हुये कार्यकलापों पर भी प्रकाश डाला गया है।

मैं पुनः आप सभी को नए वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देता हूँ और आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

नमामि गंगे परियोजना

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वैश्विक परितंत्र संरक्षण की दिशा में नमामि गंगे परियोजना को पथप्रदर्शक बताया।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने नमामि गंगे परियोजना को विश्व के 10 बड़े प्रकृति पुनरुद्धार तथा संरक्षण फ्लैगशिप कार्यक्रम के रूप में मान्यता दी है। इसके अंतर्गत नमामि गंगे को दुनिया भर के 70 देशों से ऐसी 150 से अधिक प्रयासों में से चुना गया है।

'नमामि गंगे कार्यक्रम', एक एकीकृत संरक्षण मिशन है, जिसे जून 2014 में केंद्र सरकार द्वारा 'फ्लैगशिप प्रोग्राम' के रूप में अनुमोदित किया गया था और जिसमें राष्ट्रीय नदी, गंगा के प्रदूषण, संरक्षण और कायाकल्प जैसे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए 20,000 करोड़ रुपये का बजट का प्रावधान किया गया था। इसके अंतर्गत गंगा और उसकी सहायक नदियों का पुनरुत्थान, संरक्षण के साथ गंगा बेसिन के कुछ भाग में फिर से वनीकरण करना तथा सतत मात्स्यिकी को बढ़ावा देना है। इसके साथ नदीय डॉल्फ़िन, कछुए, ऊदबिलाव, और हिलसा मछली सहित प्रमुख वन्यजीव प्रजातियों का संरक्षण करना है। भारत सरकार द्वारा अब तक $4.25 बिलियन तक का निवेश किया गया है। इस पहल में 230 संगठनों की भागीदारी है, जिसमें 1,500 किमी नदी का पुनरुद्धार किया गया है। इसके अतिरिक्त, अब तक 30,000 हेक्टेयर में वनीकरण हो चुका है, जिसमें 2030 का लक्ष्य 134,000 हेक्टेयर है।"

भारत में गंगा नदी को सबसे पवित्र नदी मानते हैं जो लाखों लोगों का भरण-पोषण करती है। पोषण और आजीविका में इसके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद देश में मछली प्रजातियों और जलीय जीवों सहित मूल वनस्पतियों का विभिन्न मानवजनित दबावों और अंतर्निहित कारणों से दिन प्रति दिन ह्रास होता रहा है। भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने स्वच्छ गंगा के लिए राष्ट्रीय मिशन के एक भाग के रूप में नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत पारिस्थितिकी और मछली विविधता की निगरानी और आकलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हमारी भारतीय संस्कृति अनंत काल से गंगा नदी से जुड़ी हुई है। हमारी संस्कृति में इसे अत्यंत ही पवित्र माना गया है इसलिए हम इसे माता के सदृश मानते हैं और हमारे हृदय में इस नदी का एक विशेष स्थान है। प्राचीन काल से ही गंगा नदी के निर्मल जल ने हमें पीने और कृषि आदि के लिए स्वच्छ और निर्मल जल प्रदान किया और हमारी भारतीय सभ्यता को और भी विकसित एवं उन्नत कर इसे सुदृढ़ बनाया है। पर ब्रिटिश काल और स्वतंत्र भारत में औद्योगिक क्रांति के कारण गंगा नदी के जल में अवशिष्ट पदार्थों को फेंकने के कारण इसके जल की गुणवत्ता धीरे-धीरे नष्ट

होती गई और इसमें प्रदूषण का प्रकोप बढ़ता गया। यहाँ तक कि गंगा नदी और अन्य कई नदियों में देशी मछलियों जैसे कतला, रोहू, मृगल, आदि की उपलब्धता घटती जा रही है। गरीब मछुआरे जो अपनी आजीविका के लिए संपूर्ण रूप से गंगा नदी पर ही निर्भरशील हैं, नदी में देशी मत्स्य प्रजातियों की उपलब्धता कम होने के कारण उनकी आय भी कम हो रही है। अतः गंगा नदी के जल को साफ करने और इसके पुनरुत्थान के लिए एक परियोजना 'निर्मल धारा – अविरल धारा' के द्वारा एक विशेष प्रयास किया है और इसके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अलग मंत्रालय

बनाया गया है। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट को सक्रिय करने के लिए राज्य सरकार को वित्तीय सहयोग द्वारा नए और उच्च क्षमता वाले सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाने की योजना है। 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के तहत पिछले 5 वर्षों के निरंतर प्रयास का अच्छा परिणाम देखने को मिल रहा है।

नमामि गंगे परियोजना के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

- रैंचिंग के माध्यम से गंगा नदी की चयनित मछली प्रजातियों (इंडियन मेजर कार्प और महसीर) को पुनर्स्थापित करना
- गंगा नदी की चयनित मछलियों (इंडियन मेजर कार्प और महासीर) के स्टॉक का आंकलन करना

রুপালি শস্যের ঢল নামবে গঙ্গায়

ফরাক্কায় ইলিশ ট্যাগিংয়ে চলছে গবেষণা

অর্ণব চক্রবর্তী ● ফরাক্কা

১৯ নভেম্বর : গঙ্গার আপস্ট্রিমে, নদীর মধ্যভাগে কীভাবে ইলিশের উৎপাদন বাড়ানো যায়, তা নিয়ে যৌথভাবে পরীক্ষামূলক গবেষণায় নেমেছে সেন্ট্রাল ইনল্যান্ড ফিশারি রিসার্চ ইন্সটিটিউট (সিআইএফআরআই) ও ব্যারাকপুর ফিশারি। ফরাক্কায় চলা সেই গবেষণা সফল হলে আগামীদিনে গঙ্গায় রুপালি শস্যের ঢল নামবে বলে মনে করা হচ্ছে।

ফরাক্কা ব্যারেজের কাছে একটি জায়গা বেছে সেখানে ফিশারি গ্রাউন্ড তৈরি করে ইলিশের গায়ে ট্যাগ লাগিয়ে এই গবেষণার কাজ শুরু করা হয়েছে। এখনও পর্যন্ত সাড়ে তিন হাজারের বেশি মাছ সেই গ্রাউন্ডে ছাড়া হয়েছে। এখনও প্রতিদিন গড়ে তিনশোর বেশি মাছ সেখানে ছাড়া হচ্ছে। ডিমওয়ালা ২২৩ থেকে ৩৪৫ মিলিমিটার দৈর্ঘ্যবিশিষ্ট ইলিশ মাছের গায়ে সিরিয়াল নম্বর দিয়ে ফ্লয় ট্যাগ লাগানো হচ্ছে। সেন্ট্রাল ফিশ রিসার্চ ইন্সটিটিউট (ব্যারাকপুর) সূত্রে জানা গিয়েছে, গঙ্গার আপস্ট্রিমে নদীর মধ্যভাগে ইলিশের উৎপাদন বাড়ানোর লক্ষ্যেই মাছের গায়ে ট্যাগ লাগানো হচ্ছে। এই গবেষণার আরেকটি উদ্দেশ্য হল ফরাক্কা থেকে এলাহাবাদ পর্যন্ত এলাকায় গঙ্গায় ইলিশের পরিযায়ী পদ্ধতিকে উপলব্ধি করা। তার জন্য ফরাক্কায় নষ্ট হয়ে যাওয়া ফিশপাসটি কীভাবে মাছের গতি অনুযায়ী নতুন করে নির্মাণ করা যায়, তাও ভেবে দেখা হচ্ছে। এর পাশাপাশি কেন্দ্র ও রাজ্যের দুটি দল ফরাক্কা থেকে এলাহাবাদ পর্যন্ত গঙ্গার দু'পাশের বিভিন্ন রাজ্য, বিশেষ করে পশ্চিমবঙ্গ, ঝাড়খণ্ড, বিহার ও উত্তরপ্রদেশের বিভিন্ন এলাকায় অবস্থিত সুলতানগঞ্জ, রাজমহল, ভাগলপুর, পাটনা, বক্সার, বালিয়া, বেনারস, প্রয়াগরাজ প্রভৃতি এলাকার মানুষকে ইলিশের জীবনধারণ সম্পর্কে সচেতন করছে। বিশেষত মৎস্যচাষি ও ব্যবসায়ীদের ইলিশ নিয়ে বেশি সচেতন করা হচ্ছে।

এপ্রসঙ্গে সিফরির (ব্যারাকপুর) বরিষ্ঠ বিজ্ঞানী ড. একে শাহ বলেন, ফরাক্কায় ইলিশের ট্যাগিং-এর মধ্যে দিয়ে আমরা গঙ্গার আপস্ট্রিমে নদীর মধ্যভাগে ইলিশের মাইগ্রেশন সম্পর্কে জানতে পারব। ইলিশের গড় উৎপাদন ক্ষমতা অর্থাৎ একেকটি মাছ কতটা ডিম ধারণ করেছে তাও জানা যাবে। এসব মাছের স্টক বাড়ানোর সঙ্গে উৎপাদন বৃদ্ধিতেও কাজে লাগবে। প্রজননক্ষম ইলিশের ঝাঁক গঙ্গার আপস্ট্রিমে অবাধে বিচরণ করতে পারছে কিনা, এই গবেষণার মাধ্যমে আমরা তা জানতে পারব। কেন্দ্রীয় জলশক্তি মন্ত্রকের ন্যাশনাল মিশন ফর ক্লিন গঙ্গার উদ্যোগে গত সেপ্টেম্বর থেকে এই কাজ শুরু হয়েছে। সেন্ট্রাল ওয়াটার কমিশন, ইনল্যান্ড ওয়াটারওয়ে অথরিটি, ফরাক্কা ব্যারেজ এবং সেন্ট্রাল ফিশ রিসার্চ ইন্সটিটিউট মিলিতভাবে গঙ্গার উপরিভাগে ইলিশের উৎপাদন বাড়াতে পারে। তবে ফরাক্কা ব্যারেজের ফিশপাসটি দীর্ঘদিন ধরে খারাপ হয়ে থাকায় ইলিশের চলাচল যে বাধাপ্রাপ্ত হচ্ছে, তা স্বীকার করে নেন তিনি।

- सतत मत्स्य पालन के बारे में हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा करना
- गंगा नदी की चयनित मछलियों (इंडियन मेजर कार्प और महासीर) का नदीय जर्मप्लास्म द्वारा बीज उत्पादन करना
- मत्स्य प्रजाति संरक्षण की दृष्टि से प्रमुख नदीय/आर्द्रभूमि विस्तार क्षेत्रों की पहचान करना।
- फरक्का बैराज के ऊपरी भाग में वन्य भागों से संग्रहीत हिल्सा मछली के बीज/पोना के रैंचिंग द्वारा हिल्सा के प्राकृतिक भंडार को बढ़ाना तथा कैप्टिव ब्रूडस्टॉक विकसित करना
- फ्लॉय टैगिंग और उन्नत तकनीकों के माध्यम से हिलसा अभिगमन मार्ग का अध्ययन करना
- विलुप्त मछलियाँ और गंगा डॉल्फिन के संरक्षण के लिए प्रयागराज से लेकर फरक्का,

संस्थान ने हिल्सा सहित स्वदेशी प्रजातियों के संरक्षण,डॉल्फ़िन संरक्षण और संवर्धन के महत्व के साथ गंगा नदी प्रणाली पर जीव विज्ञान और पारिस्थितिक आंकड़ों का भंडार पर ध्यान केंद्रित किया है। इस अध्ययन के तीन मुख्य घटक हैं:

(I) घेरे में प्रजनन के माध्यम से घटते मछली स्टॉक को बढ़ाना

(II) गंगा नदी में चयनित स्थलों पर स्वदेशी मत्स्य प्रजातियों का रैंचिंग

(III) गंगा नदी के मध्य खंड (प्रयागराज से फरक्का) में हिल्सा मत्स्य पालन में सुधार और

(IV) इंडियन मेजर कार्प प्रजातियों और महाशीर मछली के स्टॉक को बनाए रखने और संरक्षित करने के लिए मछली उत्पादन और उत्पादकता वृद्धि

(V) स्थानीय लोगों की आर्थिक स्थिति में सुधार और इसे बनाए रखना गंगा नदी के किनारे मत्स्य संसाधनों का उपयोग

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 5 दिसंबर, 2022 को विश्व मृदा दिवस मनाया

संस्थान ने 5 दिसंबर 2022 को "मृदा: जहां से भोजन की शुरूवात होती है" थीम के साथ प्रख्यात वैज्ञानिक और मृदा विज्ञान के प्रोफेसर और 50 किसानों को आमंत्रित करके "विश्व मृदा दिवस" मनाया। अपने उद्घाटन भाषण में संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के. दास ने उत्पादन वृद्धि के लिए खाद, उर्वरकों, अन्य रसायनों और मिट्टी के स्वास्थ्य के रखरखाव के संतुलित उपयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। आईसीएआर - सीएजेडआरआई के अवसरप्राप्त प्रधान वैज्ञानिक और नैशनल फेलो, डॉ. जे.सी. तरफदार जो इस कार्यक्रम के प्रधान अतिथि थे, उन्होनें "**नैनोफर्टिलाइज़र: वैश्विक खाद्य उत्पादन के लिए प्रमुख कड़ी**"; पर एक जानकारीपूर्ण व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने प्रयोगात्मक परिणामों के साथ पोषक तत्व उपयोग दक्षता, फसल की उपज में वृद्धि, कम व्यय और कम पर्यावरण प्रदूषण के संदर्भ में प्रभावी जैसे विषयों पर ध्यानकर्षण किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीसीकेवी के सेवानिवृत्त प्रोफेसर, डॉ.आर.के.बसाक ने मुख्य रूप से किसानों को संबोधित किया जो पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों और खेती के साथ -साथ जलकृषि से भी जुड़े हुए थे। उन्होंने मृदा स्वास्थ्य को बेहतर नाने के लिए फाइम, कम्पोस्ट, वर्मी-कम्पोस्ट, पोल्ट्री खाद और अन्य संभावित स्रोत के रूप में कार्बनिक पदार्थों का इस्तेमाल करने की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया, जो

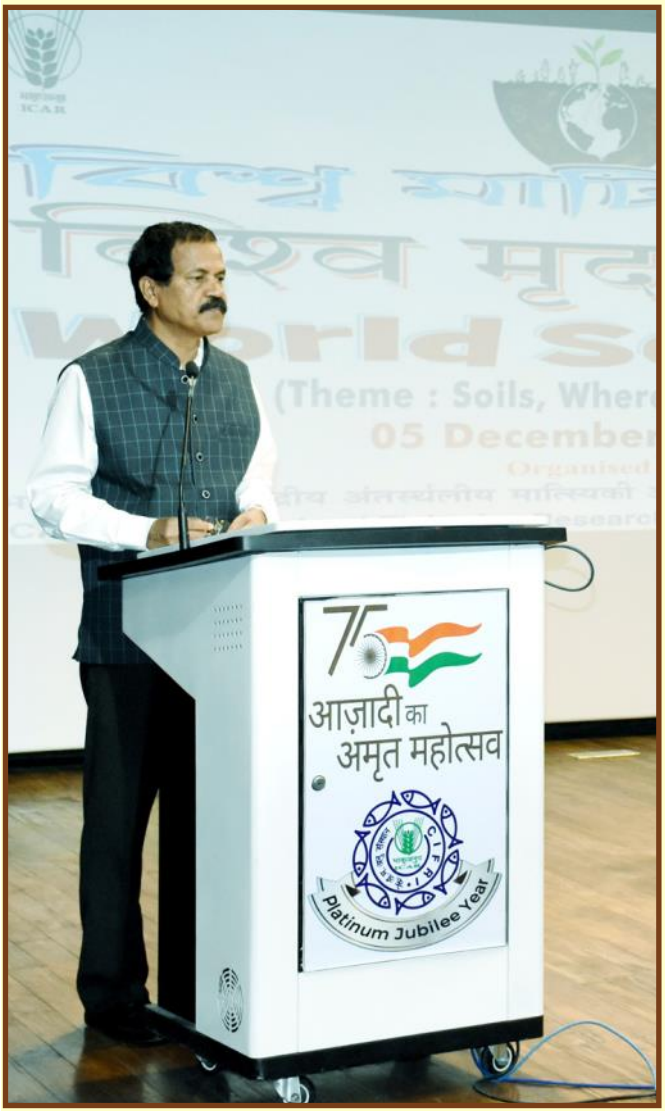

वर्षों से खेती करने पर मिट्टी से अलग हो गए हैं। लेकिन उन्होंने वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए फार्म और खाद की खुराक के बारे में चेतावनी दी। प्रो. बसाक ने तालाब की मिट्टी के प्रबंधन के बारे में भी चर्चा की और किसी भी उपचारात्मक उपाय को अपनाने से पहले मिट्टी और जल परीक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया। इस अवसर पर सिफरी ने पश्चिम बंगाल के आठ आर्द्रभूमि के प्रबंधकों को पानी की गुणवत्ता और मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पानी और मिट्टी के स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए, जो निम्नलिखित है : मोयना (पूर्व मेदिनीपुर), खलसी एवं भोमरा (नदिया जिला), ऊकीपुर, डूमा, चामता, सिंध्रानी और बेलेडंगा (उत्तर 24 परगना जिला)। किसानों ने चर्चा में भाग लिया और इसके बाद उनके समस्याओं को सुलझाया गया।

उमियाम जलाशय में पिंजरा पालन परीक्षण की सफलता के अवसर पर मेघालय में फील्ड दिवस आयोजित किया

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी) के क्षेत्रीय केंद्र , गुवाहाटी ने पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए आईसीएआर रिसर्च कॉम्प्लेक्स (आईसीएआर आरसी-एनईएचआर), उमियम के सहयोग से उमियाम जलाशय में पिंजरा पालन तकनीक का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया। पिंजरा पालन प्रौद्योगिकी की तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन करने के लिए री-भोई किसान संघ (आरएफयू) के साथ यह आयोजन पूर्वोत्तर पहाड़ी राज्य में अपनी तरह का पहला है। जलाशय में सिफ़री-केज ग्रो फ्लोटिंग फीड का उपयोग करके सिफरी-जीआई केज (6 संख्या; 100 m3/पिंजरा) में पिंजरा पालन परीक्षण किए गए। उमियम जलाशय में तीसरे संवर्धन परीक्षण के सफल समापन पर, आईसीएआर-सिफरी के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने संयुक्त रूप से आईसीएआर आरसी, एनईएचआर और उमियम के मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार के सहयोग से "मेघालय के जलाशयों में पिंजरा पालन" पर एक फील्ड दिवस का आयोजन किया। मेघालय और री-भोई किसान संघ, मेघालय के उम्निउह ख्वान गांव में 09.12.2022 को यह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन भाकृअनुप-सिफरी, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि.के. दास, एनईएचआर, उमियाम के निदेशक डॉ. वी. के. मिश्रा,की प्रेरणा से सिफ़री के क्षेत्रीय केंद्र के प्रमुख डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, के साथ- साथ पशु और मत्स्य विज्ञान विभाग (डीएएफएस) एनईएचआर, उमियम के प्रमुख डॉ. एस. के. दास द्वारा समन्वयित किया

गया। कार्यक्रम में आरएफयू के के 80 आदिवासी मछुआरों (25 महिला लाभार्थियों सहित) ने भाग लिया, जिसका नेतृत्व श्री डी. मजॉ, अध्यक्ष ने किया। दो आईसीएआर संस्थानों के वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मियों डॉ. प्रोनोब दास, डॉ. एस. येंगक्पम, डॉ. एस. बोराह, श्री टी. तायुंग, सुश्री पी. देवी (वैज्ञानिक) और श्री अलकेश दास (एसटीओ) ने तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में कार्य किया।

डॉ. पी. दास ने कार्यक्रम में आए अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और इस कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। डॉ. एस. के. दास ने प्रतिभागियों को बताया कि मेघालय के उमियाम जलाशय में पिंजरा पालन पहली बार 2019 के दौरान आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी द्वारा एनईएचआर, उमियम और री-भोई किसान संघ के सहयोग से शुरू किया गया था। उन्होंने कहा कि यह डॉ. जे. के. जेना, उपमहानिदेशक (मात्स्यिकी), आईसीएआर, नई दिल्ली के मार्गदर्शन और सिफरी, बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास की पहल के कारण संभव

हो सका है। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने उमियम जलाशय में पिंजरा पालन कार्यक्रम के लिए वित्तीय सहायता के लिए निदेशक महोदय को धन्यवाद दिया। उन्होंने उल्लेख किया कि आईसीएआर-सिफरी द्वारा विकसित पिंजरा पालन प्रौद्योगिकी को कार्यान्वित करने के लिए दोनों आईसीएआर संस्थानों ने मिलकर काम किया है ताकि मध्यम ऊंचाई की परिस्थितियों में पिंजरे की खेती की तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता का आकलन किया जा सके। उन्होंने जलाशय में किए गए तीन केज कल्चर परीक्षणों के परिणामों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों में सिफरी द्वारा की जा रही पिंजरा पालन गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। श्री डी. मजॉ ने लगातार तीसरे वर्ष उमियम जलाशय में सफलतापूर्वक पिंजरा पालन को लागू करने के लिए दोनों आईसीएआर संस्थानों को धन्यवाद दिया। री-भोई जिला के मत्स्य अधीक्षक, सुश्री मेदा ए.के ने पिंजरा पालन पर भाग लेने वाले मछुआरों के साथ बातचीत की। उन्होंने राज्य के जलाशयों में पिंजरा पालन की व्यवहार्यता का आकलन करने के लिए दोनों आईसीएआर संस्थानों को उनके प्रयास के लिए धन्यवाद दिया। मेघालय सरकार के सहायक निदेशक (मात्स्यिकी), श्री पॉल तेरियनग ने खुले पानी में मात्स्यिकी के विकास के लिए आईसीएआर-सिफरी का विशेष उल्लेख करते हुए राज्य में मत्स्य पालन के विकास में उनके प्रयास के लिए दोनों आईसीएआर संस्थानों को धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि विभाग ने वित्त वर्ष 2023-24 से 60% सब्सिडी के साथ राज्य में बड़े पैमाने पर पिंजरा पालन योजनाओं को लागू करने की योजना बनाई है। उन्होंने कार्यक्रम में तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए दोनों आईसीएआर संस्थान से भी अनुरोध किया। उम्निउह ख्वान गांव के प्रमुख श्री विलियम ल्योंगदोह ने आदिवासी मछुआरों के लाभ के लिए जलाशय में सफल पिंजरा पालन को लागू करने के लिए दोनों आईसीएआर संस्थानों को धन्यवाद दिया और भविष्य में इस गतिविधि को जारी रखने का वादा किया। इंटरैक्टिव सत्र के दौरान, वैज्ञानिकों ने पिंजरा पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रतिभागियों के साथ बातचीत की।

श्री हेखम डिंगो सिंह, माननीय मत्स्य मंत्री, मणिपुर सरकार ने डुम्बुर जलाशय में "सिफरी पिंजरा पालन स्थल" का दौरा किया

माननीय श्री हिखम डिंगो सिंह, मत्स्य पालन, समाज कल्याण, कौशल, श्रम, रोजगार और उद्यमिता मंत्री, मणिपुर सरकार के साथ-साथ श्री हिसनाम बालकृष्ण सिंह, निदेशक, मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार। मणिपुर सरकार ने 14 दिसंबर 20222 को जलाशय मत्स्य उत्पादन वृद्धि से संबंधित सिफरी, बैरकपुर की गतिविधियों विशेष रूप से जलाशय में किए गए पिंजरे में मत्स्य पालन के प्रयोगको देखने के लिए डंबूर जलाशय, त्रिपुरा का दौरा किया। श्री एच. डिंगो सिंह ने मणिपुर राज्य में स्थायी मत्स्य विकास और उत्पादन वृद्धि प्राप्त करने के लिए पेन और केज कल्चर सहित बाड़े की मछली पालन गतिविधियों को अपनाने में अपनी रुचि व्यक्त की। उन्होंने उत्तर-पूर्वी राज्यों, विशेषकर मणिपुर में मत्स्य क्षेत्र के विकास में आईसीएआर-सिफरी के प्रयासों की भी सराहना की। राज्य में अन्तर्स्थलिय खुले जल मत्स्य उत्पादन वृद्धि के लिए CI-FRI प्रौद्योगिकियों को अपनाने का आश्वासन दिया। उन्हों ने कहा की आवश्यक पढने पर मत्स्य विकास में राज्य सरकार सीआईएफआरआई से तकनीकी मार्गदर्शन भी लेता रहेगा ।

डंबूर पूर्वोत्तर भारत के त्रिपुरा के धलाई और गोमती जिलों में स्थित एक मध्यम जलाशय है। पिछले दो दशकों के दौरान जलाशय की औसत मछली उत्पादकता 120 किग्रा/हेक्टेयर/वाई है। वर्तमान में डंबूर जलाशय में 880 पिंजरे हैं। आईसीएआर-सिफरी मछली के दोहन के लिए

जलाशय में पिंजरा पालन के लिए प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी सहायता प्रदान करता रहा है। इसके अलावा, संस्थान ने पिछले दो वर्षों के दौरान जलाशय के पिंजरा मछली पकडने वालों को 20 टन केजग्रो फीड, 20 नंबर नेट पिंजरों और मछली के बीज प्रदान किए हैं।

भाकृअनुप-सिफरी ने त्रिपुरा के डुम्बुर जलाशय में 'मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए जलाशय में पिंजरा पालन' पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन

डंबुर पूर्वोत्तर भारत के त्रिपुरा के धलाई और गोमती जिलों में स्थित एक मध्यम जलाशय (3,049 हेक्टेयर) है। जलाशय से औसत मछली उत्पादकता 120 किग्रा/हेक्टेयर/वर्ष (2001-2021) है। कथित तौर पर डंबुर जलाशय में 880 पिंजरा प्रतिष्ठान हैं और कुल मिलाकर 1500 से अधिक पिंजरों के लिए मंजूरी डी गयी है। हालांकि, इन पिंजरों का अभी तक उनकी पूरी क्षमता तक उपयोग नहीं किया जा सका है। आईसीएआर -सिफरी जलाशय में पिंजरा पालन के लिए प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी सहयोग प्रदान करता रहा है। इसके अलावा, संस्थान ने 20 टन सीआईएफआरआई केजग्रो फीड, 20 नग उपलब्ध कराया है। 2020-22 के दौरान जलाशय के मछुआरों को पिंजड़े में डालने के लिए शुद्ध पिंजरा और 27000 मत्स्य बीज दिया गया है।

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा मत्स्य पालन विभाग, भारत सरकार के सहयोग से 'मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए जलाशय में पिंजरा पालन' पर दिनांक 15.12.22 को त्रिपुरा के रायश्यबाड़ी ब्लॉक, धलाई जिले, त्रिपुरा में एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का उद्देश्य जागरूकता पैदा करना और मछुआरों को प्रौद्योगिकी से अधिकतम लाभ अर्जित करने के लिए वैज्ञानिक रूप से पिंजरा पालन करने के लिए प्रेरित करना था। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी, बैरकपुर और एनईएच परियोजना के

समन्वयक ने जोर देकर कहा कि पिंजरे की खेती एक गहन जलीय कृषि प्रणाली है जहां मछली की वृद्धि मुख्य रूप से फ़ीड इनपुट की गुणवत्ता और मात्रा, स्टॉकिंग घनत्व और पिंजरे के जाल के रखरखाव पर निर्भर है। डॉ. दास कहा कि पिंजरा पालन की आर्थिक व्यवहार्यता में निर्धारित करने में प्रजातियों के चयन की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने 10 मछुआरों को पिंजरे दिये। जागरूकता कार्यक्रम में कुल 45 मछुआरों (4 महिलाओं सहित) ने भाग लिया। संवादात्मक सत्र में श्री हृदय सदन जमातिया, अध्यक्ष, पश्चिम पटिचेरा एडीसी विलेज; डॉ. एस.सी.एस. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ. डी.जे. सरकार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, आईसीएआर-सिफरी; श्री नंद गोपाल नोआतिया, डीडीएफ (सी एंड डी, नोडल अधिकारी-एनईएच), मत्स्य निदेशालय; श्री मदन त्रिपुरा, एसएफ, गंडचेर्रा, श्री ए. देबबर्मा, एसएफ जतनबाड़ी; श्री रंतादीप साहा और टिमोथी संगमा, मत्स्य अधिकारी, गंडचेर्रा ने सक्रिय भाग लिया। मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार के अधिकारियों के साथ आईसीएआर-सिफरी के वैज्ञानिको और डॉ. दास ने पश्चिम पाटीचेरा एडीसी गांव, रायश्यबाड़ी ब्लॉक, धलाई जिला, त्रिपुरा में पिंजरा पालन स्थल का दौरा किया और पिंजरा पालन अभ्यास में सुधार के लिए साइट पर सुझाव प्रदान किए।

मेघालय के री-भोई जिले में जागरूकता-सह-मत्स्य भोजन वितरण कार्यक्रम आयोजित किया

मेघालय के मध्य ऊंचाई वाले क्षेत्र में आदिवासी मछली किसानों के बीच CIFRI-CAGEGROW फ़ीड को लोकप्रिय बनाने के लिए भाकृअनुप -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी) क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने री-भोई किसान संघ, मेघालय के सहयोग से मेघालय के री-भोई जिले के उमियारोंग गांव में "जागरूकता-सह-मत्स्य चारा वितरण कार्यक्रम" का आयोजन 02/12/22 को किया।

यह कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, सिफरी, और डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, केन्द्र प्रमुख, सिफरी अनुसन्धान केन्द्र, गुवाहाटी के समग्र मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इसका आयोजन डॉ. प्रणब दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ. एस. बोरा, वैज्ञानिक (संगठन सचिव); डॉ. एस. येंगकोकपम और डॉ. डी.के. मीना, वरिष्ठ वैज्ञानिक। री-भोई किसान संगठन के 80 आदिवासी मछली किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया, जिसका नेतृत्व श्री डी. मजौ, अध्यक्ष और श्री के. ब्राइटस्टार, सचिव ने किया। इस कार्यक्रम में स्थानीय मीडिया के प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

श्री डी. मजॉ ने प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने उमियाम जलाशय में पिंजरा पालन सहित राज्य में मत्स्य पालन के विकास के लिए किए सिफरी के प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया। डॉ. प्रणब दास ने उद्घाटन में कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि आईसीएआर-सिफरी ने खुले पानी के

लिए CIFRI-GI केज, CIFRI-HDPE पेन और CIFRI-CAGEGROW फ्लोटिंग फीड का व्यवसायीकरण किया है। तथा CIFRI-CAGEGROW फ्लोटिंग फीड का खुले पानी में पेन में मत्स्य पालन के साथ-साथ तालाब जलीय कृषि में प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है। उन्होंने संस्थान द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र विशेषकर मेघालय के खुला जल मत्स्यिकी के विकास हेतु विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। डॉ. एस. येंगकोकपम ने मछली पालन में मछली के भोजन की भूमिका और विभिन्न आहार विधियों के साथ-साथ CIFRI-CAGEGROW फ़ीड उपयोग के वैज्ञानिक गुणों के बारे में बताया। डॉ. एस. बोरा ने प्रतिभागियों को सिफरी-कैजग्रो फीड के अर्थशास्त्र और क्षेत्र की ओपनवाटर फिशरीज के लिए विकसित अन्य तकनीकों तथा वैज्ञानिक मछली पालन के विभिन्न पहलुओं के बारे में भी बताया। बातचीत के दौरान, प्रतिभागियों ने मत्स्य पालन और जलीय कृषि के विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों से उच्च उत्पादन, आय और आजीविका में वृद्धि के लिए मछली पालन के वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने लाभार्थियों से CIFRI-CAGEGROW फीड के प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया साझा करने का भी आग्रह किया। इस अवसर पर जिले के 16 गांवों से 50 आदिवासी मछुआरा परिवारों को कुल 3500 किलोग्राम सिफरी-कैजग्रो फ्लोटिंग फीड वितरित किया गया। श्री के. ब्राइटस्टार ने री-भोई किसान संघ के मछुआरों को निरंतर समर्थन देने के लिए आईसीएआर-सिफरी को धन्यवाद दिया और वितरित फ़ीड के उचित उपयोग की निगरानी करने का वादा किया।

'नमामी गंगे' परियोजना के तहत बालागढ़ में आयोजित रैन्चिग प्रोग्राम में महिला मछुआरों की भागीदारी : सिफ़री की एक पहल

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री), बैरकपुर ने गंगा नदी के संरक्षण और पुनःउद्धार के लिए बालागढ़ में 'नामामी गंगे' परियोजना के तहत नेशनल रैंचिंग प्रोग्राम -2022 का आयोजन किया। सिफ़री आज तक 'नामामी गांगे' परियोजना के तहत 60 लाख से अधिक मछलियों का रैन्चिग कर चुका है। सिफ़री के निदेशक और 'नामामी गांगे' परियोजना के प्रधान अन्वेषक, डॉ. बसंत कुमार दास की उपस्थिति में हूगली जिले के बालागढ़ फेरी घाट में रैंचिंग सह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्रीपुर बालागढ़ मछुआरा सहकारी समिति के सहयोग से रोहू, कतला और मृगल के कुल 1.15 लाख कृत्रिम रूप से प्रजनित मछली जर्मप्लाज्म को बालागढ़ में छोड़ा गया। कोऑपरेटिव सोसाइटी और सिफ़री के संयुक्त प्रयास से न केवल देशी मछलियों का संरक्षण होगा बल्कि मछुआरों की आजीविका में भी वृद्धि होगी।

रैंचिंग के साथ-साथ स्थानीय मछुआरों और सिफ़री के बीच हिलसा रैंचिंग और संरक्षण संबंधित एक बैठक भी आयोजित की गई।

इस कार्यक्रम में, समाज के सभी वर्गों से सक्रिय भागीदारी देखी गई। इसके अलावा, 30 से अधिक महिला मछुआरों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया और उन्हें गंगा की बेशकीमती मछलियों के संरक्षण के बारे में भी अवगत कराया गया।

"अन्तर्स्थलीय खुले जल में बेंथोस की उन्नत पद्धति संबंधी दृष्टिकोण" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 27 से 29 दिसंबर 2022 के दौरान संस्थान के निदेशन डॉ.बि.के.दास के सक्षम मार्गदर्शन में "अन्तर्स्थलीय खुले पानी में बेन्थोस की उन्नत पद्धति दृष्टिकोण" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल, केरल, तमिलनाडु से कुल 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें 11 महिला और 7 पुरुष छात्र और शोध विद्वान थे । यह व्यावहारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम मूल रूप से खुले जल निकायों से विभिन्न बेंथिक जीवों के संग्रह, छंटाई और पहचान के लिए आयोजित किया गया था। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के.दास ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में बेन्थोस की भूमिका

और बेंथिक समुदाय का अध्ययन करने की आवश्यकता के बारे में प्रशिक्षुओं को बताया। उन्होंने उन्हें इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने और अपने भविष्य के करियर में इस ज्ञान का उपयोग करने की भी सलाह दी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान, जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, सेंट अल्बर्ट कॉलेज, कोच्चि, कोचीन यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी और सीआईएफआरआई जैसे विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों के प्रतिनिधियों को बेनथोस के संग्रह की विभिन्न पद्धतियों, मॉर्फो टैक्सोनॉमी और मैक्रोबेन्थोस, और मईओबेनथोस की गणना के बारे में जानकारी प्रदान की गई। इसके अलावा, बेंथिक समुदाय की जैव विविधता का अध्ययन करने के लिए एक विशेष व्याख्यान की व्यवस्था की गई थी। प्रशिक्षुओं के लिए पास की हुगली नदी से बेन्थोस के संग्रह पर एक व्यावहारिक सत्र के साथ-साथ नियमित प्रायोगिक कक्षाओं का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. प्रणय कुमार परिदा, श्री प्रणब गोगोई, सुश्री टी. निरुपदा चानू और श्रीमती प्रज्ञा ऋतंभरा स्वैन ने किया।

झारखंड के मैथन और पंचेत जलाशयों के पिंजरा मत्स्य उत्पादकों के बीच पिंजरा मत्स्य पालन पर जागरूकता (किसान गोष्ठी) और भाकृअनुप-सिफरी केजग्रो प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाना

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी) बैरकपुर, कोलकाता ने मात्स्यिकी निदेशालय, झारखंड के जिला मत्स्य कार्यालय के सहयोग से गोगना गांव,धनबाद, झारखंड के मैथन बांध के पिंजरों में मछली पालन प्रथाओं की उनकी क्षमता और कौशल को उन्नत करने के लिए 26.12.2022 को एक कार्यक्रम का आयोजन किया । कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. डी. के. मीणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप-सिफरी के स्वागत भाषण से हुई, जिसके बाद पिंजरा पालन प्रबंधन पर तकनीकी सह संवाद सह तकनीकी सत्र का आयोजन किया

गया। वैज्ञानिक विशेषज्ञों ने पिंजरों में मत्स्य पालन, मत्स्य आहार और पिंजरों में स्वास्थ्य प्रबंधन पर चर्चा की। इस कार्यक्रम में गोगना घाट मत्स्यजीवी सहयोग समिति लिमिटेड के 50 से अधिक मछुआरों, सिफरी की वैज्ञानिक टीम और श्री मुजाहिद अंसारी, जिला मत्स्य अधिकारी, धनबाद ने अपनी टीम के साथ भाग लिया। बातचीत के दौरान, प्रतिभागियों ने मत्स्य पालन और जलीय कृषि के विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिक टीम के साथ बातचीत की। वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों से उच्च उत्पादन, बेहतर आय और बेहतर आजीविका के लिए वैज्ञानिक पिंजरा पालन प्रथाओं को अपनाने का आग्रह किया। श्री अंसारी ने सभा को झारखंड के पिंजरा पालन और जलाशय मत्स्य पालन के विकास में सिफरी द्वारा निभाई गई भूमिका के बारे में बताया। इसके अलावा, उन्होंने जिला और राज्य में मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए चल रही योजनाओं और परियोजनाओं पर प्रकाश डाला।

इसके अलावा, 27.12.2022 को झारखंड के पंचेत बांध के पिंजरा उत्पादकों के बीच सिफरी केजग्रो प्रौद्योगिकी की जागरूकता सह लोकप्रियता का आयोजन किया गया। ग्रामीण युवा विकास मत्स्यजीवी सहयोग समिति लिमिटेड, सांवलापुर, लखीपुर मत्स्यजीवी सहयोग समिति, लखीपुर, भारत मत्स्यजीवी सहयोग समिति, बेंगड़िया, बांद्राबाद समूह के 50 से अधिक पिंजरा और बाड़े के मत्स्य उत्पादक, आईसीएआर-सिफरी की वैज्ञानिक टीम और मत्स्य पर्यवेक्षक, जिला मत्स्य कार्यालय, धनबाद के साथ मत्स्य पालन और जलीय कृषि के विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिकों के साथ बातचीत की। भाकृअनुप-सिफरी के वैज्ञानिक विशेषज्ञ ने मछुआरों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए देश के जलाशयों से सतत उत्पादन के लिए कम लागत वाली मछली फ़ीड के विकास और सर्वोत्तम प्रबंधन प्रथाओं की शुरूआत के महत्व पर जोर दिया। दोनों आयोजनों में पिंजरा (मत्स्य) उत्पादकों को पिंजरा पालन प्रबंधन और मछली चारा और आहार प्रबंधन पर पत्रक वितरित किए गए। कार्यक्रम की संकल्पना डॉ. एम. ए. हसन, प्रभारी प्रमुख, एफईएम प्रभाग द्वारा की गई थी और डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर के समग्र मार्गदर्शन में आयोजित की गई । कार्यक्रम का समन्वय डॉ. डी. के. मीणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. राहुल दास और डॉ. राजू बैठा, वैज्ञानिक द्वारा किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में सिफरी के तकनीकी सहायक मो. रबुइल एस.के., वरिष्ठ तकनीकी सहायक और श्री राकेश पाल द्वारा सहायता प्रदान की गई।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- जाड़े के महीनों में हीराकुड जलाशय में गोनियालोसा मनमीना प्रजाति की प्रचुरता दर्ज की गई। इस अवधि में इसकी पकड़ 30-60 किग्रा प्रति नाव प्रति दिन देखा गया।
- पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के बेलेडंगा आर्द्रभूमि वेटलैंड की पारिस्थितिक स्थिति, ट्रॉफिक और ऊर्जा प्रवाह पैटर्न का अध्ययन इकोपैथ-मास बैलेंसड मॉडल द्वारा किया गया है। इस मॉडल ने वेटलैंड को एक अपरिपक्व के रूप में पहचाना लेकिन एक बेहतर सिस्टम रिजर्व (ओवरहेड या सिस्टम रिजर्व 55%) था।
- मानसून के बाद, मानसून पूर्व और मानसून के मौसम में खारे पानी की मछली पालन के लिए नटावती-गुरुपुर मुहाने का जल गुणवत्ता सूचकांक (WQI) 66-44 की सीमा में था।
- नवंबर 2022 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली उतरने का अनुमान 11.64 टन था, जो नवंबर 2021 की तुलना में कुल मछली पकड़ने में 31.21% की वृद्धि दर्शाता है।
- दिसंबर 2022 के दौरान पटना में गंगा नदी से आनुमानित मछली लैंडिंग 1.02 टन था, जो नवंबर 2022 की तुलना में 29.11% की वृद्धि दर्शाता है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने 23वें ओडिशा विज्ञान 'ओ' परिवेश कांग्रेस में सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया। उड़ीसा पर्यावरण सोसायटी और संबलपुर विश्वविद्यालय, बुर्ला ने संयुक्त रूप से दिनांक 26-27 नवंबर 2022 को 23वें ओडिशा विज्ञान 'ओ' परिवेश कांग्रेस (ओबीपीसी) का आयोजन किया है।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 12 दिसंबर, 2022 को लखनऊ, उत्तर प्रदेश में आईसीएआर-राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो के स्थापना दिवस समारोह में भाग लिया।

संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 13-16 दिसंबर 2022 के दौरान केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, लेम्बुचेरा, त्रिपुरा के कॉलेज ऑफ फिशरीज में आयोजित 'रिस्पॉन्सिबल एक्वाकल्चर एंड सस्टेनेबल फिशरीज इंटरेक्शन' 2022 (राशि, 2022) पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने आईसीएसएफ चेन्नई द्वारा आयोजित एसएसएफ दिशानिर्देशों पर प्रशिक्षकों के राष्ट्रीय प्रशिक्षण (टीओटी) कार्यशाला (अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन) में भाग लिया और सेवा केंद्र, कोलकाता, पश्चिम बंगाल में दिनांक 22-24 दिसंबर 2022 को आयोजित किया गया।

अन्य

- संस्थान में 'स्वच्छता पखवाड़ा' दिनांक 16-31 दिसंबर, 2022 के दौरान संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर और क्षेत्रीय केंद्रों प्रयागराज, गुवाहाटी, बैंगलोर, वडोदरा, कोच्चि और कोलकाता में दैनिक गतिविधियों के साथ मनाया गया।

- गंगा नदी में कुल 3822 वयस्क हिलसा और 4500 हिलसा मछली के पोनों को फरक्का के अपस्ट्रीम में रैंचिंग किया गया, जिनमें से 31 मछलियों को अभिगमन मार्ग अध्ययन के लिए किया गया।
- विश्व मृदा दिवस 5 दिसंबर 2022 के अवसर पर पश्चिम बंगाल में आठ आर्द्रभूमियों के प्रबंधकों को जल गुणवत्ता और मृदा स्वास्थ्य बनाए रखने तथा किए जाने वाले उपाय दिशानिर्देश के साथ जल और मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- संस्थान ने केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान के एमएफएससी के छात्रों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 15 दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। दिनांक 06-20 दिसंबर, 2022 के दौरान इस प्रशिक्षण में 6 छात्रों ने भाग लिया।

- संस्थान द्वारा मत्स्य विभाग, भारत सरकार के सहयोग से 'मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए जलाशय में पिंजरा पालन' पर जागरूकता कार्यक्रम पर दिनांक 15 दिसंबर 22 को त्रिपुरा के पश्चिम पाटीचेरा एडीसी गांव, रायशबाड़ी ब्लॉक, धलाई जिला, त्रिपुरा में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में कुल 50 प्रतिभागियों (4 महिलाओं सहित) ने भाग लिया।

- संस्थान ने दिनांक 13-16 दिसंबर, 2022 के दौरान COFLA और NESFA के सहयोग से मात्स्यिकी महाविद्यालय, त्रिपुरा द्वारा आयोजित रिस्पॉन्सिबल एक्वाकल्चर एंड सस्टेनेबल फिशरीज इंटरफेस (RASHI) पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रदर्शनी में भाग लिया।
- डॉ सुब्रा रॉय को मात्स्यिकी महाविद्यालय, त्रिपुरा द्वारा आयोजित

रिस्पॉन्सिबल एक्वाकल्चर एंड सस्टेनेबल फिशरीज इंटरफेस (RASHI) पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में श्रेष्ठ युवा वैज्ञानिक का पुरुष्कार प्राप्त हुआ।

- संस्थान ने मात्स्यिकी महाविद्यालय, ढोली, बिहार के चौथे वर्ष के B.F.Sc छात्रों के लिए एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जहां 33 छात्रों ने दिनांक 20 दिसंबर, 2022 भाग लिया
- संस्थान ने दिनांक 20 दिसंबर, 2022 को बेथून कॉलेज, कोलकाता के बी.एससी. के प्रथम वर्ष के छात्रों द्वारा आयोजित की प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें 16 छात्रों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 21 दिसंबर, 2022 को मात्स्यिकी महाविद्यालय, उदगीर, लातूर, महाराष्ट्र के चौथे वर्ष के B.F.Sc छात्रों के लिए एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें 29 को छात्रों ने भाग लिया।
- संस्थान के प्रधान वैगयानिक डॉ. विजय कुमार बेहरा एवं विभाग प्रमुख का चयन डीन, मत्स्यिकी कॉलेज , रानी लछमी बाई केन्द्रीय विश्वविद्यालय, झाँसी में हुआ ।

- दिनांक 25 नवंबर, 2022 को उप-महानिदेशक (शिक्षा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की ऑनलाइन प्रस्तुति में संस्थान तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों के सभी वैज्ञानिकों ने भाग लिया।
- दिनांक 02 दिसंबर, 2022 को उप-महानिदेशक (एनआरएम) की ऑनलाइन प्रस्तुति में संस्थान तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों के सभी वैज्ञानिकों ने भाग लिया।
- दिनांक 05 दिसंबर, 2022 को उप-महानिदेशक (बागवानी) की ऑनलाइन प्रस्तुति में संस्थान तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों के सभी वैज्ञानिकों ने भाग लिया।
- दिनांक 13 दिसंबर, 2022 को उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) की ऑनलाइन प्रस्तुति में संस्थान तथा क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों के सभी वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

विविध

- दिनांक 17 दिसंबर 2022 को भारतीय पेटेंट कार्यालय, कोलकाता में "ए रिमोट कंट्रोल्ड ड्रोन बेस्ड वॉटर सैंपलिंग सिस्टम" नामक एक पेटेंट आवेदन दायर किया गया है। दायर पेटेंट आवेदन संख्या 202231073303 है।
- "सिफरी सर्कुलर केज" नामक एक ट्रेडमार्क पंजीकरण आवेदन 30-11-2022 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नाम से क्लास 22 के तहत दायर किया गया है। ट्रेडमार्क आवेदन संख्या 5703691 है।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

ত্রিপুরা বিবর্তন
Tripura Bibortan ◆ Daily Newspaper ◆ 2nd Year ◆ Issue : 180 ◆ Saturday ◆ 17 December ◆ 2022

মৎস্য পালন করে স্বনির্ভরশীল হওয়ার জন্য ব্যাপক উদ্যোগ নিয়েছে সর্বভারতীয় মৎস্য দপ্তর

বিবর্তন প্রতিনিধি, গন্ডাছড়া, ১৬ ডিসেম্বর।। ধলাই জেলার গন্ডাছড়া মহকুমার অন্তর্গত ডুম্বুর জলাশয়ে মৎস্যশিকারী বা মৎস্য পালন করে স্বনির্ভরশীল হওয়ার অন্তর্গত পশ্চিম পোতাছড়ার আট নম্বর ডাইক দশমমান বিদ্যালয়ের হল ঘরে কেস কালচারেল -এর উপর এক সচেতনামূলক শিবির অনুষ্ঠিত হয়। উক্ত শিবিরে যোগ কিভাবে স্বনির্ভরশীল হাওয়া যায় তার বিশদে আলোচনা করেন। উক্ত সভায় মৎস্য কর্মকর্তারা জানান ডুম্বুর জলাশয়ে লাইসেন্সধারী প্রত্যেক মৎস্যজীবিকে ইন্সুরেন্স -এর আওতায় আনা হয়েছে। প্রত্যেক মৎস্যজীবিকে ইন্সুরেন্স -এর সার্টিফিকেট প্রদান করা হয় উক্ত অনুষ্ঠানে। উক্ত অনুষ্ঠানের মুখ্যঅতিথি তথা উদ্বোধক আই সি এ আর সিফরি ডিরেক্টর বসন্তকুমার তার বক্তব্যে ডুম্বুর জলাশয়ের ফিশারম্যানদের উদ্দেশ্যে বলেন বর্তমান সরকারের মৎস্য দপ্তর আপনাদের পাশে রয়েছে। সমস্ত সাহায্য দেওয়ার জন্য প্রস্তুত মৎস্য দপ্তর। কেস কালসার -এর মাধ্যমে দশ টাকা খরচ করে একশো টাকা উপার্জন করা যায়।

মৎস্য চাষিদের প্রশিক্ষন কর্মসূচি

রাষ্ট্রীয় কন্ঠ প্রতিনিধি, গন্ডাছড়া, ১৫ ডিসেম্বর।। ধলাই জেলার গন্ডাছড়া মহকুমার অন্তর্গত ডুম্বুর জলাশয়ে মৎস্যশিকারী বা মৎস্য পালন করে স্বনির্ভরশীল হওয়ার জন্য ব্যাপক উদ্যোগ নিয়েছে সর্বভারতীয় মৎস্য দপ্তর। সারা দেশের বড় বড় জলাশয় নিয়ে রিসার্চ করে চলেছেন সেন্ট্রাল আইল্যান্ড ফিশারিস রিসার্চ ইনস্টিউট। গন্ডাছড়া মহকুমার অন্তর্গত ডুম্বুর জলাশয়ে মৎস্য চাষীদের সুনির্দিষ্ট প্রশিক্ষন দিতে বৃহস্পতিবার গন্ডাছড়ায় ছোটে আসেন পশ্চিমবঙ্গের ব্যারাকপুর থেকে আই সি এ আর চিফরি ডিরেক্টর বসন্তকুমার দাস। ওইদিন গন্ডাছড়া মহকুমার রইস্যাবাড়ী ব্লকের অন্তর্গত পশ্চিম পোতাছড়ার আট নম্বর ডাইক দশমমান বিদ্যালয়ের হল ঘরে কেস কালচারেল -এর উপর এক সচেতনামূলক শিবির অনুষ্ঠিত হয়। উক্ত শিবিরে যোগ দেন আই সি এ আর সি আই এফ আর আই ব্যারাকপুর আগত ডিরেক্টর বসন্তকুমার দাস। উক্ত অনুষ্ঠানে মুখ্য অতিথি ডিরেক্টর বসন্তকুমারকে উত্তরীয় পড়িয়ে সংবর্ধনা জানান কর্মকর্তারা। উক্ত অনুষ্ঠানে উপস্থিত ছিলেন ডক্টর এস সি এস দাস, ডক্টর ডি জে সরকার, এন জি নয়তিয়া, গন্ডাছড়া ফিসারী সুপার মদন ত্রিপুরা সহ অন্যান্যরা।উক্ত শিবিরে বিভিন্ন বক্তা মৎস্য পালকদের সহজ উপায়ে মৎস্য উৎপাদন করে কিভাবে স্বনির্ভরশীল হাওয়া যায় তার বিশদে আলোচনা করেন। উক্ত সভায় মৎস্য কর্মকর্তারা জানান ডুম্বুর জলাশয়ে লাইসেন্সধারী প্রত্যেক মৎস্যজীবিকে ইন্সুরেন্স -এর আওতায় আনা ... প্রত্যেক মৎস্যজীবিকে ... -এর সার্টিফিকেট প্রদা... উক্ত অনুষ্ঠানে। উক্ত ... মুখ্যঅতিথি তথা উদ্বো... সি এ আর সিফরি ... বসন্তকুমার তার বক্ত... জলাশয়ের ফিশার... উদ্দেশ্যে বলেন ... সরকারের মৎস্য ... আপনাদের পাশে রয়ে... সাহায্য দেওয়ার জন্য প্র... দপ্তর। কেস কালসা... মাধ্যমে দশ টাকা খ... একশো টাকা উপার্জন ...

মাছের চারা ছাড়া হল গঙ্গায়

বলাগড়: প্রায় লুপ্ত হতে বসা মাছের বংশবৃদ্ধি করতে ব্যারাকপুরের সিআইএফআরআই(সেন্ট্রাল ইনল্যান্ড ফিশারিজ রিসার্চ ইনস্টিটিউট)-এর পক্ষ থেকে মঙ্গলবার বলাগড়ের গঙ্গায় কৃত্রিম ভাবে প্রজনন করা মৃগেল-সহ ১ লক্ষ ১৫ হাজার মাছের চারা ছাড়া হল। 'নমামি গঙ্গে' কর্মসূচিতে এ দিনের ওই উদ্যোগে উপস্থিত ছিলেন মৎস্যবিজ্ঞানী মিতেশ রাম টেক। সিআইএফআরআই-এর নির্দেশক বসন্ত দাস জানান, স্থানীয় মৎস্যজীবীদের গঙ্গায় মাছ চাষ নিয়ে সচেতন করা হয়। বিভিন্ন প্রজাতির মাছ ও ডলফিনকে টিকিয়ে রাখা নিয়ে আলোচনা হয়।

মাছ ছাড়া হচ্ছে।

যুগশঙ্খ

আইসিএআর ও সিআইএফআরআই-এর যৌথ উদ্যোগে বলাগড়ে 'নমামি গঙ্গে' প্রকল্প

নিজস্ব প্রতিনিধি। ৬ ডিসেম্বর

আইসিএআর-সেন্ট্রাল ইনল্যান্ড ফিশারিজ রিসার্চ ইনস্টিটিউট, বারাকপুর গঙ্গা নদী সংরক্ষণ ও পুনরুদ্ধারের জন্য বলাগড়ে 'নমামি গঙ্গে' প্রকল্পের অধীন 'ন্যাশনাল রেঞ্চিং প্রোগ্রাম-২০২২' এর আয়োজন করে। এখনও পর্যন্ত সিআইএফআরআই এনএমসিজি প্রকল্পের অধীন ৬০ লক্ষেরও বেশি মাছ রেঞ্চিং করা হয়েছে। এরই ধারাবাহিকতায় ডা. বসন্ত কুমার দাস, ডিরেক্টর, সিআইএফআরআই এবং পিআই (এনএমসিজি প্রকল্প) এর উপস্থিতিতে হুগলি জেলার অধীনস্ত বলাগড় ফেরিঘাটে একটি রেঞ্চিং এবং সচেতনতামূলক অনুষ্ঠানের আয়োজন করা হয়।

শ্রীপুর বলাগড় মৎস্যজীবী সমবায় সমিতির সহযোগিতায় বলাগড়ে নদীতে মোট ১.১৫ লক্ষ কৃত্রিমভাবে প্রজনন করা রুই, কাৎলা ও মৃগেল মাছের জার্ম প্লাজম ছাড়া হয়েছে। সোসাইটি এবং সিআইএফআরআই-এর যৌথ প্রচেষ্টা দেশীয় মাছ সংরক্ষণের পাশাপাশি জেলেদের জীবন-জীবিকা উন্নয়নে সাহায্য করবে।

রেঞ্চিয়ের পাশাপাশি এলাকায় ইলিশ পালন এবং সংরক্ষণের জন্য সিআইএফআরআই এবং স্থানীয় মৎস্যজীবীদের মধ্যে এক সভাও অনুষ্ঠিত হয়। এদিনের কর্মসূচিতে সমাজের সকল স্তরের মানুষের সক্রিয় অংশগ্রহণ লক্ষ্য করা গেছে। এছাড়াও, ত্রিশ জনেরও বেশি মহিলা মৎস্যজীবী এই অনুষ্ঠানে অংশগ্রহণ করেন এবং গঙ্গার পুনরুজ্জীবন এবং মূল্যবান গাঙ্গেয় মাছের পুনরুদ্ধারের বিষয়ে সচেতন হন।

वर्तमान पत्रिका
एक बेहतर सुबह की शुरुआत

स्वनिर्भरता की ओर | सिफरी ने तैयार किया कई जलाशयों की मिट्टी और पानी का हेल्थ कार्ड

राज्य में मछली उत्पादन बढ़ाने का लक्ष्य

सहयोग

» आठ हजार से ज्यादा मछली पालकों को फायदा होगा

» 8 आर्द्रभूमि के 30 लाभार्थियों को सौंपे गये स्वास्थ्य कार्ड

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत
दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है